अक्रम यूथ

सितम्बर 2021 हिन्दी

दादा भगवान परिवार

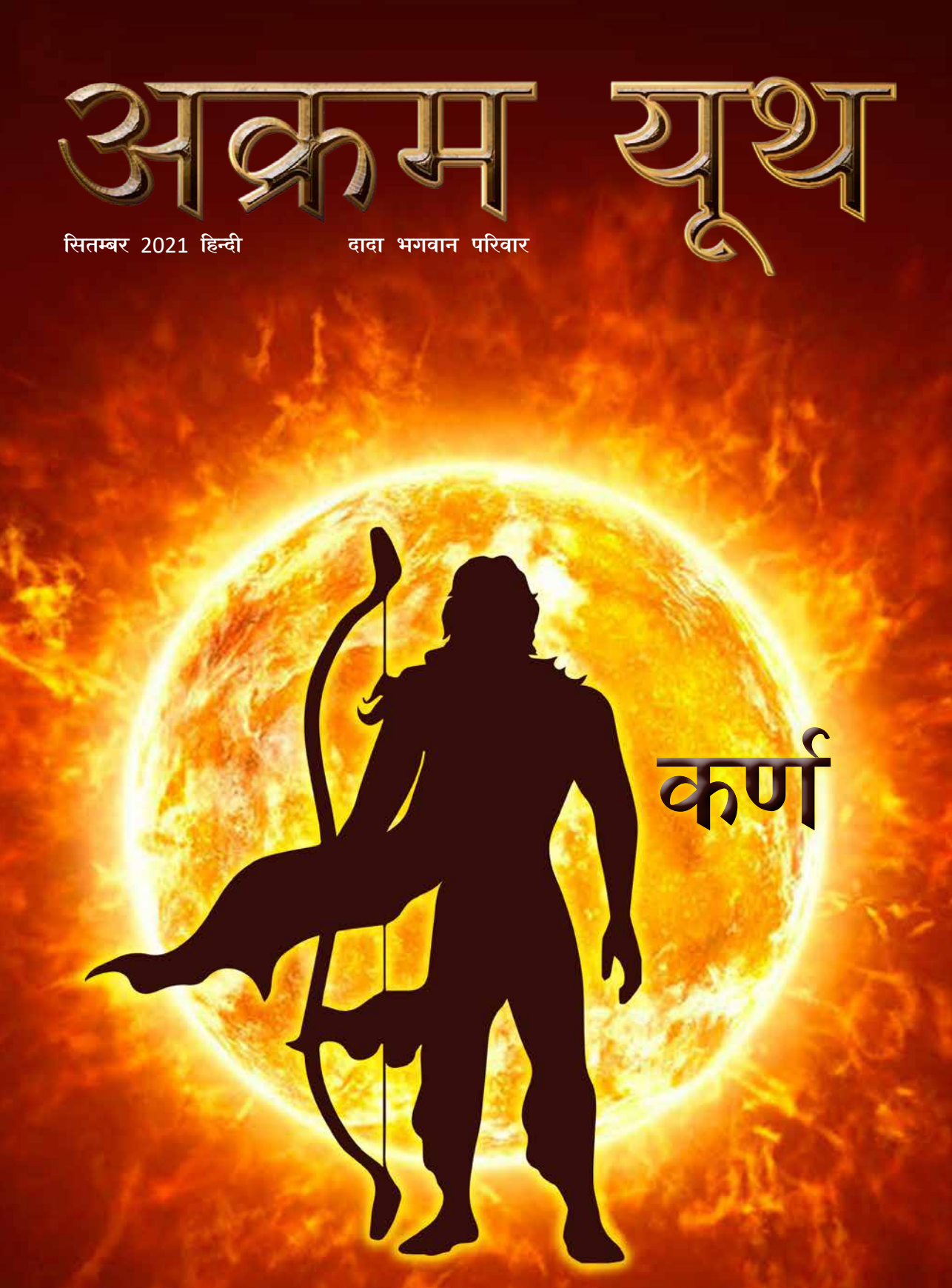

कर्ण

अनुक्रमणिका

4 मैं समय हूँ!

5 महारथी कर्ण

6 अक्रमपीडिया - कर्ण की कठिन परीक्षा!

10 नेवर गिव अप!

12 कौन्तेय या राधेय?

14 मित्र या शत्रु?

16 ज्ञानी विद् यूथ

17 एक्टिविटी

18 कॉम्पीटिशन

19 श्रेष्ठ **VS** उत्तम

20 दानवीर कर्ण

22 दान के चार प्रकार

23 #कविता

24 **100 Months of AY Celebration**

सितम्बर 2021

वर्ष : 9, अंक : 5

अखंड क्रमांक : **101**

संपर्क सूत्र :

ज्ञानी की छाया में,

त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,

अहमदाबाद-कलोल हाइवे,

मु.पो. - अडालज,

जिला : गांधीनगर-382421, गुजरात

फोन : (079) 39830100

email: akramyouth@dadabhagwan.org

website: youth.dadabhagwan.org

store.dadabhagwan.org

संपादक : डिम्पल मेहता

Printer & Published by

Dimplebhai Mehta on behalf of

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj - 382421.

Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by : Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj - 382421.

Taluka & Dist - Gandhinagar

Published at : Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj - 382421.

Taluka & Dist - Gndhinagar

Printed at : Amba Multiprint

B-99, GIDC, Sector-25,

Gandhinagar – 382025. Gujarat.

Total 24 Pages with Cover page

Subscription

Yearly Subscription

India :200 Rupees

USA: 15 Dollars

UK: 12 Pounds

5 Years Subscription

India : 800 Rupees

USA: 60 Dollars

UK: 50 Pounds

In India, D.D. / M.O. should be drawn in favour of "Mahavideh Foundation" payable at Ahmedabad.

© 2021, Dada Bhagwan Foundation.

All Rights Reserved

संपादकीय

मित्रों,

हम सभी को प्रिय पौराणिक कथा महाभारत में कोई भी एक व्यक्ति मुख्य पात्र या महानायक नहीं है। लेकिन फिर भी महाभारत के कई प्रभावशाली पात्र अपने विशिष्ट व्यक्तित्व के कारण इतिहास में अमर हो गए। पिछले अंक में हमने भीष्म पितामह के बारे में कई अनोखी बातें जानीं, अब इस अंक में हम महाभारत के एक और प्रभावशाली पात्र महारथी कर्ण के बारे में जानेंगे।

महारथी कर्ण के जीवन के अनेक विरोधाभासी पहलू उनके व्यक्तित्व को और भी रोचक बनाते हैं। एक क्षत्रिय राजकुमार होते हुए भी उन्हें जीवन भर सारथीपुत्र के तौर पर अपमान और उपहास सहन करने पड़े। एक तरफ कर्ण को भरी सभा में द्रौपदी का अपमान करने के कार्य में सहभागी बनने और युद्ध में अवैध रूप से अभिमन्यु का वध करने जैसे जघन्य दुष्कर्मों के लिए दोषी माना जाता है तो दूसरी तरफ उनकी दानवीरता और वफादारी की तुलना महाभारत के किसी अन्य पात्र के साथ नहीं की जा सकती। अधर्म यानी कि कौरवों के पक्ष में होने के बावजूद भी लोगों के मन में उनकी छवि एक आदरणीय महायोद्धा के तौर पर हमेशा बरकरार रहेगी। इसका कारण क्या है? तो चलो, समय बर्बाद न करते हुए पढ़ते हैं... दुर्योधन के इस परम मित्र अंगराज कर्ण के बारे में कुछ सुनी-अनसुनी बातें। और साथ ही यह भी समझेंगे कि इनमें से हमें क्या सीखना है।

-डिम्पल भाई मेहता

हेलो फ्रेन्ड्स...

आप सब इंस्टाग्राम पर तो होंगे ही ना?

वेल, मैं नहीं हूँ। लेकिन अगर होता तो मेरा इंस्टाग्राम प्रोफाइल कुछ इस तरह होता।

"मैं निरंतर बहता रहता हूँ... लेकिन मैं नदी नहीं हूँ"

"मेरी कोई शुरुआत नहीं है और कोई अंत नहीं है... मैं स्थायी हूँ!"

"मैं कालचक्र का सब से छोटा भाग हूँ।"

बताओ मैं कौन हूँ?... मुझे पहचाना?

हाँ...सही समझें!

मैं समय हूँ!

मेरे दिल में कितनी ही बातें समाई हुई हैं। आज मैं उनमें से आपको एक अनोखे महारथी की बात बताने जा रहा हूँ, जिसका नाम है... "कर्ण"!

महारथी कर्ण

कर्ण यानी महाभारत की कहानी का एक महत्वपूर्ण पात्र!

राजकुमारी कुंती की सेवा और भक्ति से प्रसन्न होकर महर्षि दुर्वासा ने उनको दैवी मंत्र दिए, इन मंत्रों की आराधना करके वे देवों से मनचाहे पुत्र प्राप्त कर सकती थीं।

"क्या सच में इन मंत्रों से पुत्र की प्राप्ति होती है?" मंत्रों की परीक्षा करने के लिए जिज्ञासावश कुंती ने सूर्यदेव की आराधना की और यह क्या?! उनके गर्भ से सूर्यपुत्र कर्ण का अवतरण हुआ! अगर कुँआरी कुंती बच्चे की माँ बने तो लोगों में बदनामी होगी। इसलिए डर के कारण अपनी गलती छुपाने के लिए कुंती ने बच्चे को जन्म देते ही उसे नदी में बहा दिया।

और दूसरी तरफ सारथी अधिरथ और उनकी पत्नी राधा को, नदी में बहते बालक को देखकर ममता उमड़ आई और वे उसे अपने घर ले आए। जन्म से ही सूर्यदेव से प्राप्त कवच और कुंडलधारी तेजस्वी राज कुमार का लालन-पालन एक साधारण सारथी के घर हुआ, जो बड़े होकर 'राधेय' के नाम से पहचाने गए।

समय-समय की बात है!

शास्त्रों में यह भी उल्लेख है कि कर्ण भावी चौबीसी के बीसवें तीर्थंकर भगवान होंगे!

तो आओ देखें कि कर्ण के जीवन में ऐसा क्या हुआ... जिससे वे एक साधारण इंसान में से महान इंसान बने? बात लंबी है इसलिए चलो हम स्टारबक्स चलते हैं और हॉट चॉकलेट पीते-पीते बातें करेंगे।

वाह, हम स्टारबक्स पहुँच गए! अरे... ये आयुष और हर्ष यहाँ क्या कर रहे हैं?

अक्रमपीडिया

नाम : आयुष मेहता
उम्र : 22 वर्ष

कर्ण की कठिन परीक्षा!

आयुष : हर्ष, यार नाटक को दो ही दिन बाकी हैं और कर्ण के कैरेक्टर में मैं फिट ही नहीं हो पा रहा हूँ।

हर्ष : क्यों, क्या हुआ?

आयुष : यार, ये कर्ण का रोल मुझे कठिन लगता है। एक्टिंग करने के लिए पहले आपको कैरेक्टर को गहराई से समझना पड़ता है लेकिन मैं कर्ण को समझ ही नहीं पा रहा।

हर्ष : क्यों, इसमें कठिन क्या है?

आयुष : लगता है तुम कर्ण की स्टोरी नहीं जानते। वेट, मैं तुम्हें मेरी स्क्रिप्ट पढ़कर स्टोरी सुनाता हूँ।

कर्ण ब्राह्मणपुत्र के रूप में अपनी झूठी पहचान बताकर परशुराम के पास शस्त्र का अभ्यास करते थे। गुरु परशुराम को भी कर्ण पर अत्यंत प्रेम और विश्वास था और वे उन्हें उत्तम शस्त्र कला सिखलाते थे। एक दिन वे कर्ण की गोद में सिर रखकर सो रहे थे। तभी एक भौंरा उड़ता-उड़ता कर्ण की जाँघ पर बैठा और उसे ज़ोर से डंक मारा। कर्ण को बहुत पीड़ा हुई पर गुरु की नींद में विघ्न न पहुँचे इस आशय से वे बिना हिले वेदना सहन करते रहें। उनके पाँव से रक्त बहने लगा। गरम रक्त का स्पर्श होते ही गुरु परशुराम की नींद खुल गई। कर्ण की सेवा और सहनशीलता को देखकर खुश होने के बजाय गुरु अत्यंत क्रोधित हो गए।

"तुम ब्राह्मण नहीं हो सकते। ब्राह्मण में इतना धीरज और सहनशक्ति नहीं हो सकती। मुझे बताओ कि तुम किस जाति के हो!"

सूतपुत्र के तौर पर कर्ण ने अपना सच्चा परिचय दिया।

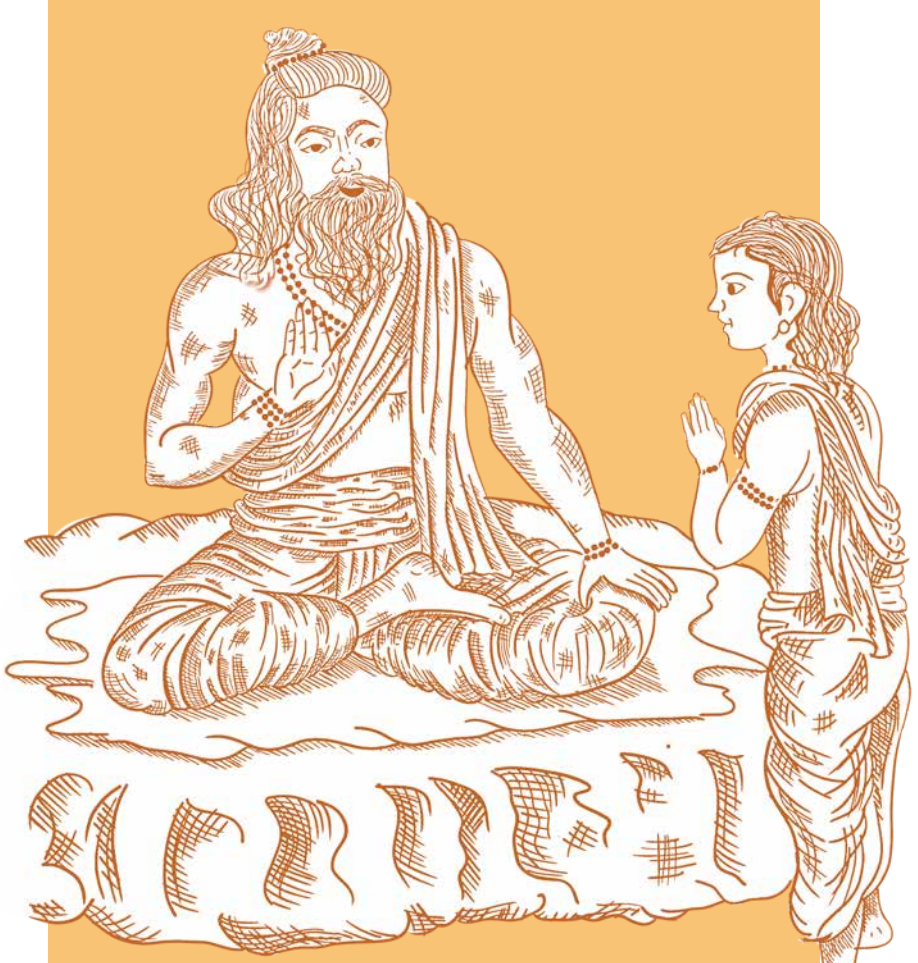

यह सुनते ही परशुराम ने तुरंत कर्ण को श्राप दिया कि **"तुमने छलपूवर्क मेरे से विद्या प्राप्त की है इसलिए जब तुम्हें इसकी सब से ज्यादा ज़रूरत होगी तब तुम उसे भूल जाओगे!"**

हर्ष : ओह, गुरु की उपस्थिति में इतना अनुशासन! और कर्ण ने इतना सबकुछ किया लेकिन एक झूठ बोलने की इतनी बड़ी सज़ा?

आयुष : झूठ? यह तो विश्वासघात कहलाता है हर्ष... वो भी ऐसे छल-कपटपूर्वक।

हर्ष : हमम... लेकिन कर्ण को बहुत दुःख हुआ होगा।

आयुष : हाँ यार... लेकिन इतना सब हो जाने के बावजूद कर्ण को अपने गुरु के प्रति विनय कम नहीं हुआ। और हम...?

हर्ष : क्लास बंक करना... टीचर का मज़ाक उड़ाना... क्लास में मस्ती करना... टीचर कुछ कहें तो उनके साथ आर्ग्युमेन्ट करना... ये सब करते हैं।

आयुष : यानी ये सब टीचर का अविनय है? और इसीलिए मैं यह रोल प्ले नहीं कर पा रहा हूँ?

हर्ष : हमम... एक वीडियो दिखाता हूँ। इसमें ऐसा ही किसी का प्रश्न था।

प्रश्नकर्ता : मेरा प्रश्न यह है कि हम कॉलेज में जो नियम तोड़ते हैं और शिक्षक का अविनय करते हैं, उसमें कोई कनेक्शन है? जैसे कि कॉलेज में रूल्स हो कि क्लास में फोन इस्तेमाल नहीं करना, लेक्चर के दौरान खाना नहीं खाना, किसी की प्रॉक्सी नहीं लगाना, टीचर को पलटकर जवाब नहीं देना, सबमिशन समय पर कर देना आदि। यदि हम इन सब नियमों का पालन नहीं करते हैं तो क्या ये गुरु का अविनय कहा जाएगा? पूज्यश्री, अविनय बहुत बड़ा शब्द लगता है और ये सब बातें बहुत छोटी हैं, तो मुझे समझाइए।

पूज्यश्री : हम कॉलेज में पढ़ने जाते हैं...? और कॉलेज में रिसेस होता है कि नहीं होता?

प्रश्नकर्ता : होता है।

पूज्यश्री : तो आप लेक्चर के पहले या बाद में खा सकते हो ना? आपको फोन का इस्तेमाल करना हो तो वह भी लेक्चर के पहले या बाद में इस्तेमाल कर सकते हो ना?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

पूज्यश्री : तो फिर कॉलेज में पढ़ने जाते हो तो पढ़ाई में ही ध्यान रखो ना। पढ़ते समय फोन करो, मस्ती

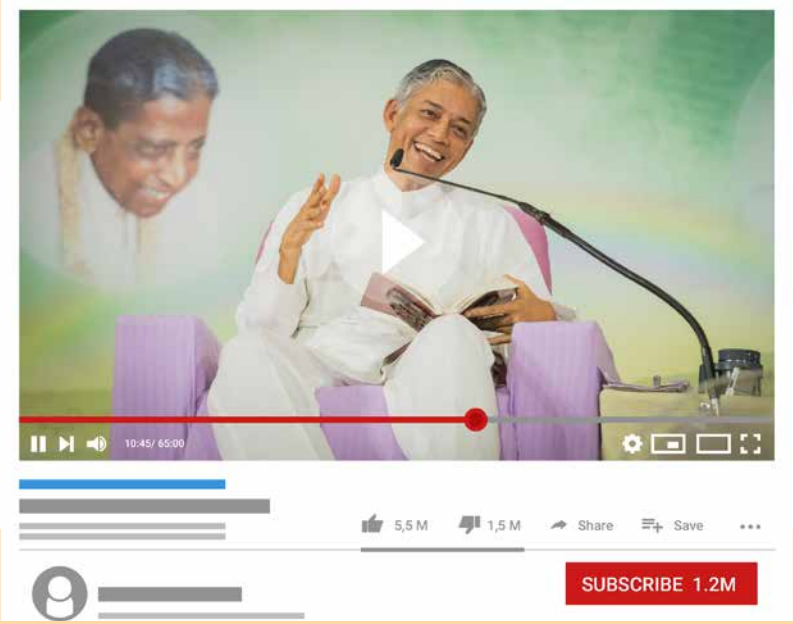

करो, किसी का मज़ाक उड़ाओ, खाना खाओ तो क्या टीचर खुश होगें?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

पूज्यश्री : भोजन को एक तरफ रखकर अभी आप एकाग्रता से सत्संग सुन रहे हो ना! यह ज्ञान की बात है और वह व्यवहार और पढ़ाई की बात है इसलिए उसे अविनय ही कहा जाएगा। छोटी-छोटी गलतियाँ करते रहोगे तो कभी बड़ी गलती करने में भी चुकोगे नहीं। हम पढ़ाई करने जाते हैं तो वहाँ सिन्सियरली पढ़ाई करनी चाहिए। लेक्चर के पहले या बाद में समय मिले तो हँसी-मज़ाक करो लेकिन ऐसा मज़ाक मत करो कि किसी का नुकसान हो, किसी को दुःख हो।

प्रश्नकर्ता : लेकिन पूज्यश्री, हमारा उद्देश्य टीचर का अविनय करना नहीं है। सिर्फ कभी आलस में, मस्ती

में, तो कभी इगो में आकर हम रूल्स ब्रेक कर देते हैं।

पूज्यश्री : हाँ, लेकिन अभी आप मुझसे प्रश्न पूछ रहे हो और मैं इधर-उधर देखता रहूँ, आपकी बात नहीं सुनूँ, तो आपको अच्छा लगेगा? मैं आपके साथ बात कर रहा हूँ और आप अगर चॉकलेट खाने लगो, तो बात करने में अच्छा लगेगा?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

पूज्यश्री : वैसे ही अगर टीचर पढ़ा रहे हों और हम दूसरा कुछ करते रहें तो यह अविनय कहलाएगा! आपको पता है ज्ञान ऊपर से नीचे की ओर आता है। इसलिए यदि हमें ज्ञान प्राप्त करना हो तो विनय में रहना चाहिए। आप ऐसे शरारत करते हो, मज़ाक-मस्ती करते हो, खाते-पीते हो, फोन करते हो तो यह अविनय कहलाता है। इससे आपको ज्ञान का एक शब्द भी समझ में नहीं आएगा और ऊपर से दूसरा कुछ सीखने जाओगे तो आवरण आ गया होगा, आप को कुछ ग्रहण ही नहीं होगा। आपको लगेगा, 'मुझे समझ में क्यों नहीं आ रहा?' क्योंकि हमने गुनाह किया है, अंतराय डाले हैं।

भले ही कम समझ में आए या समझ में ना आए पर शांति से बैठना चाहिए और ध्यान से सीखना चाहिए। तो धीरे-धीरे समझ में आने लगेगा, आवरण टूटते जाएँगे। टीचर के शुद्धात्मा से प्रार्थना कर सकते हो, **'हे शुद्धात्मा भगवान! टीचर जो पढ़ाते हैं वो ज्ञान अच्छी तरह से समझ में आए ऐसी कृपा करना',** तो ऐसे प्रार्थना करने से हमें कम मेहनत में ही ठीक से समझ में आ जाएगा। और जब टीचर पढ़ा रहे हों तब हम दुरुपयोग करते हों अथवा मज़ाक-मस्ती करते हों या अविनय करते हों तो दो नुकसान होंगे। एक तो टाइम बिगड़ा, टीचर का अविनय किया और हमें भविष्य में ज्ञान के ऊपर आवरण आ जाएँगे। अंतः ऐसा नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से अच्छा है कि खाना-पीना, फोन वगैरह लेक्चर के पहले या बाद में निपटा लो लेकिन क्लास में एकाग्रता से पढ़ाई करो। एकाग्रता से पढ़ोगे तो परीक्षा के समय कम पढ़ना पड़ेगा!

आयुष : ओह, आइ सी... अब मुझे ठीक से समझ में आ गया कि विनय यानी क्या? और यह भी समझ में आया कि कर्ण के जीवन से दो बातें सीखने जैसी हैं। एक तो यह कि क्या करना चाहिए और दूसरी बात कि क्या नहीं करना चाहिए। मुझे लगता है कि अब मैं कर्ण का रोल अच्छी तरह से प्ले कर पाऊँगा।

नेवर गिव अप!

यह तो समय-समय की बात है!

मित्रों, सोचो कि अगर आप कोई कठिन काम पूरा करने के लिए मेहनत करते हो और लोग आकर आपसे कहें...

"तुम नालायक हो, तुम्हें कुछ नहीं आता!"

"कैसे-कैसे लोग यहाँ आ जाते हैं!"

"एक ही बात तुमको कितनी बार कहनी पड़ेगी? दिमाग़ में नहीं बैठता?"

"तुमसे अच्छा परफार्म तो दूसरे लोग करते हैं, यू आर ए फेल्यर!"

"तुम से ये होगा ही नहीं!"

... तो क्या आपका उत्साह बना रहेगा?

क्या आप शांति से सुनकर अपना काम कर सकोगे?

आप अपना काम पूरा करोगे या बीच में ही छोड़कर भाग जाओगे?

देखते हैं, कर्ण के जीवन में क्या हुआ था।

यह उस समय की बात है जब महाभारत का युद्ध शुरू हुआ था। पांडवों के पक्ष में शामिल राजा शल्य को दुर्योधन ने कपट से अपने पक्ष में कर लिया और उनको कर्ण का सारथी बनाया। अपनी गलती का पछतावा होने पर राजा शल्य ने पांडवों के पास जाकर माफी माँगी और बदले में कोई भी एक वचन माँगने को कहा। पांडवों ने राजा शल्य से वचन माँगा कि वे युद्ध में बार-बार कर्ण का अपमान करके उसके उत्साह को तोड़ते रहेंगे और वचन के अनुसार राजा शल्य ने युद्ध के मैदान में कर्ण को बहुत कुछ कहा!

- 'आप भले ही राजा बन गए हो पर क्षत्रिय कुल के तो नहीं ही कहलाओगे न। आखिरकार हो तो सूतपुत्र ही!'
- 'आपको गुरु के पास से श्राप ही मिला। जबकि अर्जुन को ऐसे गुरु मिलें जिन्होंने उसे महान धनुर्धर बनाया।'
- 'अर्जुन की जीत होगी ही क्योंकि वासुदेव कृष्ण उसके सारथी हैं। युद्ध में आपकी हार निश्चित है!'
- 'अर्जुन तो अर्जुन है, कोई धनुर्धर उससे श्रेष्ठ नहीं है। आपके कवच और कुंडल भी उसके सामने काम नहीं आएँगे राधेय।'
- 'भले ही पांडव पाँच हैं पर सौ कौरवों से भी बढ़कर हैं!'

यह सब सुनकर कर्ण को राजा शल्य पर शक तो हुआ लेकिन फिर भी वे चुप रहें। किसी के भी आत्मविश्वास को हिलाकर रख दे ऐसे शब्द सुनकर भी कर्ण का आत्मविश्वास ज़रा भी नहीं डगमगाया। इसके बजाय वे युद्ध के मैदान में अर्जुन को बराबर की टक्कर देने के लिए अडिग रहें।

ये तो समय-समय की बात है!

मित्रों, एक पल सोचकर देखो... जब किसी काम में आपके उत्साह को तोड़ने वाली नेगेटिव परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई हों तब क्या आप उस काम में 100% योगदान कर पाए थे या आपने गिव अप करके उस काम को छोड़ दिया था?

कौन्तेय या राधेय?

आजकल 'माँ' या 'माता' कहकर बुलाना तो भूल ही गए हैं। सभी 'मम्मी' कहकर ही बुलाते हैं। समय-समय की बात है भैया!

"मम्मी...!"

ये शब्द कान में पड़ते ही आपको क्या याद आता है?

हाँ! प्रेम, हँसता हुआ चेहरा, गरमाहट भरी गोद, मम्मी का दुलार, मम्मी के हाथ का बना खाना... और मम्मी की किचकिच भी! सही कहा न?!

मम्मी हमारे लिए कितना कुछ करती हैं ये तो हमें पता ही है ना? फिर भी हम अकसर उनकी कदर नहीं करते। उल्टा उनके ऊपर गुस्सा करके उनको दुःख दे देते हैं और कभी-कभी तो पलटकर जवाब भी दे देते हैं।

मित्रों, क्या आप जानते हैं? कर्ण के बहुत सारे नाम हैं। कर्ण, सूर्यपुत्र, अंगराज, वायुसेना, दानवीर, राधेय...

लेकिन उनको राधेय के नाम से पहचाने जाना ज्यादा पसंद था। क्यों? क्योंकि यह नाम उनकी माता के साथ जुड़ा हुआ था। कर्ण के जीवन में एक नहीं, दो माताएँ थीं। पहली, उनको जन्म देने वाली माता कुंती और दूसरी, उनकी परवरिश करने वाली माता राधा।

कर्ण को जब पता चला कि उनको जन्म देने वाली माता राधा नहीं बल्कि महारानी कुंती हैं तब भी पालक माता राधा के लिए उनका आदर और प्रेम कम नहीं हुए। कर्ण को पता था कि उनको जो सम्मान और सामाजिक स्वीकृति चाहिए वह 'कौन्तेय'(कुंतीपुत्र) के रूप में मिलेगी। लेकिन फिर भी उन्होंने पूरे दिल से 'राधेय' (राधा के पुत्र) के रूप में पहचाने जाना पसंद किया।

उस काल में बच्चे का नाम उसके पिता के नाम के आधार से रखा जाता था। जैसे कि 'पांडु' राजा के पुत्र 'पांडव' कहलाए। 'कुरु' राजा के वंशज 'कौरव' कहलाए। आज भी हमारे नाम के पीछे पिता का नाम लगाते हैं। लेकिन कर्ण हमेशा अपने पिता अधिरथ के नाम के बजाय माता राधा के नाम से जाने जाते थे।

इससे पता चलता है कि कर्ण के मन में अपनी माता के लिए कितना सम्मान था, वे उनके लिए कितनी महत्वपूर्ण थीं!

मित्र या शत्रु ?

कर्ण का पात्र महाभारत का सब से दुःखद पात्र रहा है।

जन्म देने वाली माँ ने उन्हें बचपन में ही छोड़ दिया, राजकुमार होते हुए भी उन्होंने एक सारथीपुत्र के रूप में जीवन व्यतीत किया और समाज में अपमान और तिरस्कार सहन किया। यह कोई छोटी बात नहीं कही जाएगी। इसी कारण अर्जुन के प्रति उनकी ईर्ष्या, द्वेष और बदले की भावना बढ़ते गई।

ऐसे में कर्ण को दुर्योधन के रूप में मित्र का साथ मिला और वे अंत तक इस मित्रता के प्रति वफादार रहें। यदि कर्ण के जीवन में दुर्योधन नहीं आते तो शायद उनके जीवन में युद्ध की परिस्थिति ही नहीं आई होती।

परंतु, समय-समय की बात है!

कर्ण की मित्रता का एक छोटा सा उदाहरण देता हूँ।

जब दुर्योधन अपनी सेना के साथ हस्तिनापुर से कुरुक्षेत्र जाने के लिए रवाना हो रहे थे, तब उनकी पत्नी भानुमती बहुत चिंतित थीं। दुर्योधन द्वारा उसे सांत्वना देने के सभी प्रयास असफल रहे। तब मित्र कर्ण ने भानुमती को आश्वासन देते हुए कहा कि "मैं अपनी अंतिम साँस तक दुर्योधन की रक्षा करूँगा।" कर्ण की ये बात सुनकर अंत में भानुमती को शांति हुई।

पता है, इस मित्रता की वजह क्या थी?

जब कर्ण को चारो ओर से अपमान और तिरस्कार मिल रहा था उस समय दुर्योधन ने अंग देश के राजा के रूप में कर्ण को सम्मानित किया। जब किसी ने भी कर्ण को क्षत्रिय के रूप में स्वीकार नहीं किया तब दुर्योधन ने कर्ण को अपनी सेना में स्थान दिया। दुर्योधन को पांडवों से बदला लेना था और कर्ण के दिल में भी अर्जुन को हराने की आग धधक रही थी। 'शत्रु का शत्रु, मित्र' इसी आधार पर दुर्योधन ने पांडवों से बदला लेने के लिए कर्ण की तरफ मित्रता का हाथ बढ़ाया और कर्ण ने भी हर कदम पर अपने मित्र का साथ दिया।

शायद यह कर्ण की सब से बड़ी गलती थी। दोस्ती टूटे नहीं और मित्र का ऋण चुका सके इस ललक में कर्ण उचित-अनुचित का विवेक भूल गए। ऐसा करने के बजाय कर्ण दुर्योधन को सच्ची समझ देकर सही मार्गदर्शन देने का प्रयत्न कर सकते थे।

मित्रों, क्या आपके जीवन में कभी ऐसा हुआ है कि किसी दोस्त से प्रभावित होकर उससे दोस्ती बनाए रखने के लिए आपने गलत काम में भी उसका साथ दिया हो? अथवा उसे सही राह पर चलने के लिए प्रेरित न किया हो?

चलो, देखते हैं, सच्चा मित्र किसे कहते हैं?

ज्ञानी विद् यूथ

प्रश्नकर्ता : दीपक भाई, मुझे सत्संग आना हो लेकिन मेरे फ्रेन्ड्स को अच्छा नहीं लगता हो। तो मैं उनसे यूँ ही बहाना बनाकर सत्संग आ जाऊँ तो इसमें मेरा फायदा ही है ना? ऐसा करने से हमारा झगड़ा तो नहीं होगा!

पूज्यश्री : तुम्हारे ऐसे कैसे फ्रेन्ड्स हैं कि तुम सच बोलो तो उन्हें पसंद नहीं आएगा? अगर पसंद नहीं आता है तो उन्हें फ्रेन्ड कैसे कहा जा सकता है?

गली के नुक्कड़ पर खड़े होकर बातें करना, क्या वे हमारे फ्रेन्ड्स हैं?!! ऐसे दोस्तों को धीरे-धीरे कम करते जाना। राग-द्वेष होते हों उनके साथ फ्रेन्डशिप क्या करना? सत्संग वालों के साथ फ्रेन्डशिप करो ना! ताकि सत्संग की बातें हो पाएँ। बाकी फ्रेन्ड्स के साथ अगर झगड़ा होता हो, हमें झूठ बोलना पड़ता हो, तो इसका क्या अर्थ है? तुम अगर उनसे कहो कि मैं सत्संग में जा रहा हूँ तो वो तुम्हारे साथ आएँगे?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

पूज्यश्री : तो ऐसे फ्रेन्ड्स किस काम के? उल्टा वो तुम्हारी मज़ाक उड़ाएँगे कि बड़ा साधु बन गया है। तो फिर उन्हें बताने की ज़रूरत ही क्या है? फ्रेन्डशिप रखना पर उनके साथ सुपरफ्लुअस रहना। फ्रेन्डशिप टिकी तो ठीक और नहीं टिकी तो छूट गई। समझ में आया ना? सुपरफ्लुअस रहना। बहुत अटैचमेन्ट रखते हैं ना, इसलिए फिर झगड़े होते हैं।

बहुत बातें हो गईं, अब एक्टिविटी करते हैं।

एक्टिविटी

महाभारत में से अर्जुन और कर्ण द्वारा बोले गए 7 वाक्य नीचे दिए गए हैं। आपको यह पहचानना है कि कौन से वाक्य अर्जुन द्वारा बोले गए हैं और कौन से कर्ण द्वारा बोले गए हैं।

1	जिस दिन से तुमने हस्तिनापुर प्रतियोगिता में भाग लिया था उसी दिन से मैं तुम्हें हराने के लिए इंतज़ार कर रहा हूँ।	अर्जुन / कर्ण
2	मुझे केवल चिड़िया की आँख ही दिखाई दे रही है, गुरुदेव।	अर्जुन / कर्ण
3	वो लगातार मुझसे स्पर्धा करता है, जबकि खरा शूरवीर केवल उत्तम बनने का लक्ष्य रखता है।	अर्जुन / कर्ण
4	अपनी क्षमता साबित करने के लिए मैंने अपनी सच्चाई छुपाई थी और मुझे खुशी है कि अंत में मैं एक कुशल योद्धा साबित हुआ।	अर्जुन / कर्ण
5	**शिष्य :** अँधेरा हो गया है। अब लक्ष्य दिखाई नहीं दे रहा है। **गुरु :** अर्थात् तुम्हारी आँखें कमज़ोर हैं। एक योद्धा को अपनी कमज़ोरियों के बारे में पता होना ही चाहिए। **शिष्य :** मेरी आँखें कमज़ोर नहीं है गुरु द्रोण, पर अँधकार बाधक बन रहा है। **गुरु :** यदि कोई पत्थर को हाथ से नहीं तोड़ सकता है तो पत्थर बाधक बन रहा है या हाथ कमज़ोर है? **शिष्य :** मैं इस अँधेरे के सामने अवश्य ही जीत हासिल करूँगा।	अर्जुन / कर्ण
6	गुरु द्रोण उत्साह में आपने अपने शिष्यों को दुनिया के सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर घोषित कर दिया, लेकिन मैं आपके इस कथन को झूठा साबित करूँगा।	अर्जुन / कर्ण
7	आपने एकलव्य का अँगूठा क्यों माँगा, गुरुदेव? मुझे सर्वश्रेष्ठ बनना है, मेरी स्पर्धा किसी और के साथ नहीं, मेरे स्वयं के साथ ही है।	अर्जुन / कर्ण

उत्तर: १) कर्ण २) अर्जुन ३) अर्जुन ४) कर्ण ५) अर्जुन ६) कर्ण ७) अर्जुन

समय-समय की बात है।
लेकिन कुछ चीज़ें समय के साथ नहीं बदलती, उनमें से एक है "स्पर्धा" यानी कॉम्पीटिशन।

कॉम्पीटिशन

कर्ण और अर्जुन दोनों एक-दूसरे के साथ कॉम्पीटिशन तो करते थे, पर दोनों का दृष्टिकोण (एटीट्यूड) अलग था, वह आपको एक्टिविटी के सही जवाब से समझ में आ गया होगा।
स्पर्धा खराब नहीं है, यदि इसे स्वस्थ तरीके से किया जाए तो।

अनहेल्दी कॉम्पीटिशन

(दूसरों के साथ स्पर्धा)

- खुद की वैल्यू बढ़ाने के लिए।
- दूसरों का अटेन्शन पाने के लिए।
- दूसरों को छोटा दिखाने के लिए।
- .....
- .....
- .....
- .....
- .....
- .....

हेल्दी कॉम्पीटिशन

(खुद अपने साथ स्पर्धा)

- खुद की क्षमता बढ़ाने के लिए।
- खुद को खुद से ही श्रेष्ठ साबित करने के लिए।
- दूसरों के लिए उपयोगी होने के लिए।
- .....
- .....
- .....
- .....
- .....

श्रेष्ठ vs उत्तम

आज की इस कॉम्पीटिटिव दुनिया में हम सब सफलता पाने के लिए रेस में दौड़ रहे हैं। लेकिन जाना कहाँ है ये भूल गए हैं।

इस बात का डर है कि मैं पीछे न रह जाऊँ। लेकिन कोई यह नहीं सोचता कि मैं जहाँ हूँ वहाँ क्या बदलूँ ताकि खुद को और बेहतर बना सकूँ।

हम सभी कर्ण की तरह सर्वश्रेष्ठ बनना चाहते हैं। लेकिन क्या हमें अर्जुन की तरह उत्तम बनने का लक्ष्य नहीं रखना चाहिए?

आप सोचोगे, श्रेष्ठ और उत्तम में क्या अंतर है? मैं आपको बताता हूँ।

श्रेष्ठ का अर्थ क्या है? श्रेष्ठ का अर्थ है कि दूसरों की तुलना में अधिक ज्ञान, कौशल, क्षमता या शक्ति प्राप्त करना। इसमें कीमत इस बात की नहीं है कि खुद को कितना प्राप्त हुआ है बल्कि मूल्य इस बात का है कि जो प्राप्त किया है वह दूसरों की तुलना में कितना ज्यादा है?

जबकि उत्तम का अर्थ है कि जितना प्राप्त करने लायक है वह सब प्राप्त कर लेना और दूसरों के साथ स्पर्धा करने की बजाए खुद के साथ ही स्पर्धा करना। जो व्यक्ति उत्तम बनने का प्रयास करता है वह अपने आप ही अपने क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ बन जाता है। परंतु जो केवल दूसरों से श्रेष्ठ बनने पर ही फोकस करते हैं वे कभी भी अपने क्षेत्र में उत्तम नहीं बन सकते।

तो मित्रों, आप खुद ही तय करो... आपको श्रेष्ठ होना है या उत्तम?

दानवीर कर्ण

हमने कर्ण के जीवन के बहुत सारे अच्छे-बुरे पहलूओं को देखा और उससे सीखा।
अब कर्ण का एक ऐसा पहलु देखते हैं जो इतिहास में अद्वितीय है, दानवीर कर्ण के रूप में।

दान मतलब अपनी कोई चीज़ दूसरों को देकर उन्हें खुशी देना और दानवीर का मतलब जो वीरतापूर्वक दान देता है, जिसे दान देते समय अपने बारे में विचार भी नहीं आता।
समय-समय की बात है।

दानवीर कर्ण के यहाँ से कोई भी खाली हाथ नहीं लौटता था। कर्ण पूरा जीवन उनके पास जो था वो दूसरों के सुख के लिए लूटाते रहें। वो चाहे धन हो या खुद की रक्षा के लिए शरीर के साथ जुड़े कवच और कुंडल हों। जब भी किसी ने उनके पास आकर कुछ माँगा, कर्ण ने एक पल सोचे बिना ही वह दे दिया।

तो चलो, मैं आपको अपनी नज़र से उस दानवीर की वीरता का एक प्रसंग दिखाता हूँ।

महाभारत के युद्ध का वह दिन जब कर्ण और अर्जुन दोनों आमने-सामने युद्ध कर रहे थे। युद्ध के दौरान कर्ण के रथ का एक पहिया टूट गया। वे गंभीर रूप से घायल हो गए, इसलिए उनके सैनिक कर्ण को युद्ध के मैदान से बाहर ले आए।

उस समय भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा, "तुमने कर्ण को एक कुशल योद्धा के रूप में तो देखा, अब मैं तुमको उसकी दानवीरता दिखाता हूँ।" कृष्ण और अर्जुन दोनों ब्राह्मण का वेश धारण करके कर्ण के पास गए और उन्होंने कर्ण से भिक्षा माँगी। कर्ण ने कहा, "भू देव, मैं मरणासन्न स्थिति में आपको क्या भिक्षा दे सकता हूँ?" ब्राह्मण के वेश में श्री कृष्ण भगवान ने कहा कि "हमने तो सुना है कि अंगराज कर्ण के पास से कोई खाली हाथ नहीं लौटता।"

कर्ण ने तुरंत ही पत्थर लेकर अपना सोने का दांत तोड़ दिया। फिर अपने धनुष से धरती में तीर मारा, वहाँ से पानी का फव्वारा निकला। कर्ण ने सोने के दांत को पानी से साफ करके दोनो ब्राह्मणों को भेट स्वरूप दिया।

कर्ण की ऐसी अद्‌भुत दानवीरता देखकर अर्जुन तो स्तब्ध रह गए। किसी भी प्रकार की परिस्थिति में हमेशा दान देने के लिए तैयार रहने वाले कर्ण के प्रति बहुत अहोभाव हुआ।

ये तो समय-समय की बात है।

आप सोच रहे होंगे कि कर्ण के जितना न तो हमारे पास धन है और ना ही वीरता। तो फिर हम दान कैसे करें? कर्ण के जैसी दानवीरता इस काल में असंभव है। लेकिन मित्रों, लक्ष्मी का दान करने के अलावा भी दान करना संभव है।

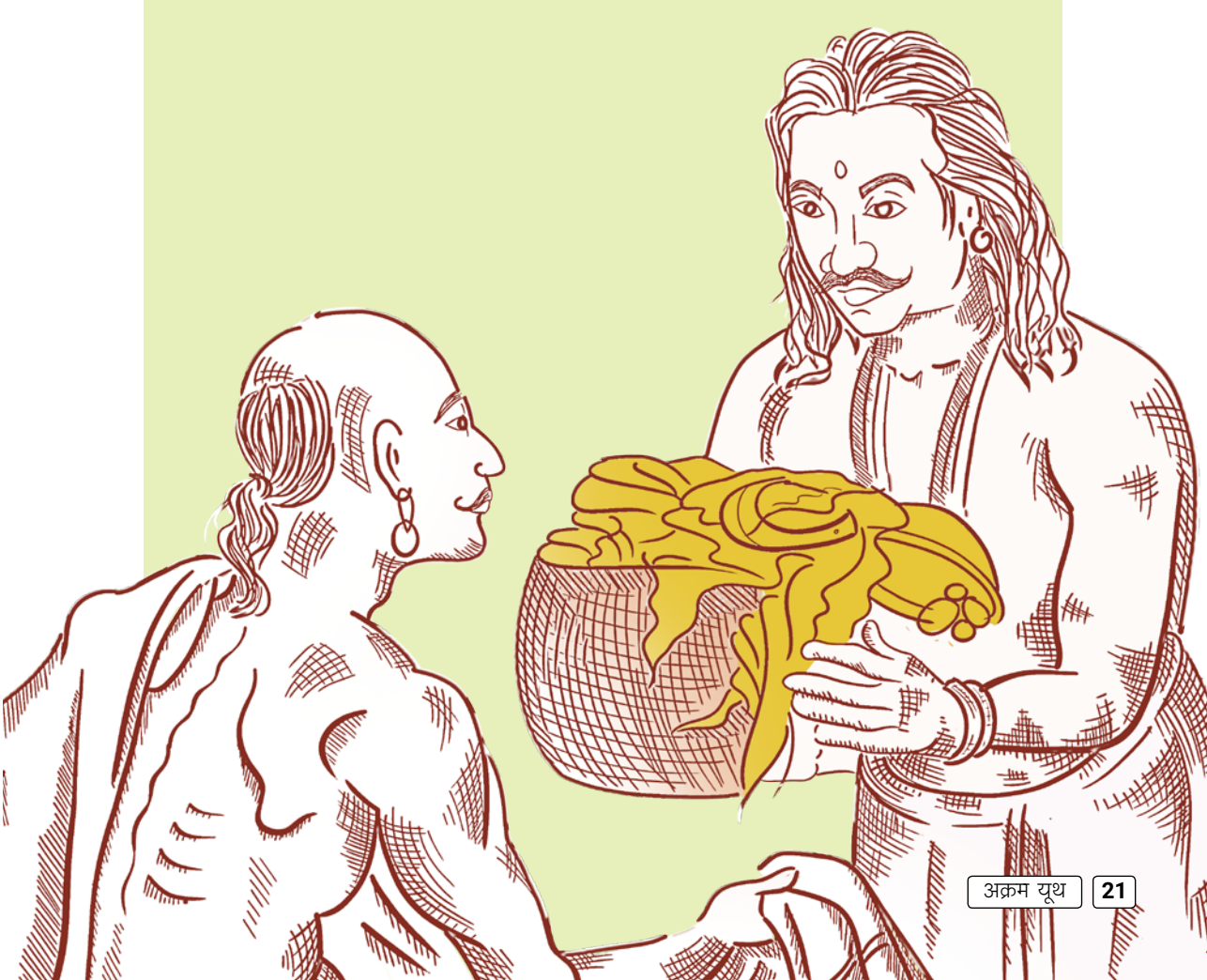

दान के चार प्रकार

दादाश्री ने दान के चार प्रकार बताए हैं।

आहारदान - अर्थात् भूखे को खाना खिलाना।

औषधदान - अर्थात् कोई बीमार और गरीब को दवाई देना।

ज्ञानदान - किसी गरीब को पढ़ाने से लेकर आत्मज्ञान देने तक सबकुछ ज्ञानदान कहलाता है।

अभयदान - किसी भी जीव को बिलकुल दुःख न हो, भय या परेशानी न लगे ऐसा व्यवहार करना वो अभयदान है।

हमसे जो संभव हो वह दान में दे सकते हैं ना?

#कविता

सूर्यपुत्र कर्ण का जीवन, स्वंय एक अग्निकुंड है...
कर्म का सबसे विकट, प्रहार सहन करने वाला योद्धा प्रचंड है...

स्वंय श्वेत धर्म की, अधर्म के रथ पर सवारी है...
धरा पर राधा सुत की, विवशता सबसे भारी है...

दिन उगता नहीं, प्रकाश के पुत्र की गली अंधेरी है...
अमृत सुशोभित जिसमें, ऋणों से भरी क्यारी है...

इलाज क्या करे उसका? उन्हें मित्रता में महामारी है...
भीतर तक घायल, वह कवच-कुंडल धारी है...

अंतिम समय दर्शन दिया, माँ तू कितनी प्यारी है...
अब क्या निकालना? कुल के प्रश्नों की कटार रास आ गई है...

अर्जुन के हिस्से श्री कृष्ण, उनके हिस्से कई श्राप हैं...
जहाँ नज़र गड़ाए, वहाँ एक नवीन संताप है...

तन, मन, जीवन ऐसा तो बहुत दिया, गज़ब दानवीर है...
इतना कैसे पचा सके? मानो स्वंय सागर गंभीर है...

पहले से रक्त बहाता, फिर भी मैदान में पड़ा धनुर्धारी है...
जीवन जैसे हृदय चुभन, कर्ण सिर्फ मृत्यु का आभारी है...

दादा के युवाओं द्वारा

सितम्बर 2021
वर्ष : **9**, अंक : **5**
अखंड क्रमांक : **101**

100 months of AY (Akram Youth) Celebration

Akram Youth Team
Selfie with **Pujyashri**

www.akramyouth.org

Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org
Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.
Printed at : Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.